हमने भी हृदय को पाषाण बना लिया।
एक छोटे से घर का निर्माण करा लिया।
आये चाहे अगहन चाहे आये सावन।
उसी में बिताना है अब सारा जीवन।
नहीं चाहिये ऐसी फूलों की वादी,
जो गैरों को पाकर हमें भूल जाये।
इससे तो बेहतर हैं कांधों के गुलशन,
निभाते हैं क़ौल लाख तुफ़ां भी आये।
ऋतु जब ले आयेगी पतझड़ का मौसम।
कलुष हर्ष तब हो जायेगा संगम।
वो प्रियतम संग अपने क्रीड़ा करेंगे।
इधर अश्रु से हम घड़े को भरेंगे।
यूं अब न सजेगी कभी कोई महफिल,
बनेगी न अब कोई स्नेहिल कहानी।
सफर ज़िन्दगी का अकेले कटेगा,
ये बस चार दिन की तो है ज़िन्दगानी।
चूंकि हो गये विफल करते-करते आवेदन,
मिली न कभी भी सफलता की मंजिल।
करेंगे न अब हम किसी से निवेदन,
रहे हम न उनके मोहब्बत के काबील।
भरोसा नहीं अब जमाने पर हमको।

किया बेदखल आशियाने से हमको।
ये दुनियां है यारों निरा मतलबी की।
इसे न फ़िकर है हमारी छवि की।
बड़ी भूल की अपने जीवन में हमने।
बिना सोचे समझे की विश्वास हमने।
यही काश पहले समझ में आ जाता।
तो शायद किसी से मैं दिल न लगाता।
लेकिन मिटे न किस्मत की लकीरें।
करें लाख कोशिश न बनती तक़दीरें।